International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume VI, Issue IV, August 2019 Available online at: www.ijaur.com

निराला और उनकी कविता में किसान संघर्ष

बृजलाल अहिरवार[1] और डा0 सत्येन्द्र शर्मा[2]
1. शोधार्थी हिन्दी विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा
2. पूर्व अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा, रीवा म0प्र0

सारांश– हिन्दी साहित्य के कवि महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला ने समाज में मनुष्यता पर वर्षों से होने वाले अत्याचार, शोषण की दिखायी देने वाली एंव कही जाने वाली संवेदना पर शासक के असंवेदनशीलता तथा मानवीय मूल्य के साथ देशप्रेम पर कवि ने अपने काव्य के माध्यम से संवेदना की अभिव्यक्ति को रेखांकित किया गया है। साथ–ही–साथ महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला गॉव के खेतिहर किसानों और मजूदरों की दुःखभरी दास्तान का यथार्थ चित्रण किया गया रूढिवादी और परम्परावादी होते हैं। किसानों को इस समस्या से मुक्त कराने के लिए उन्होंने कविता के माध्यम से जागरूकता भरने की भरपूर कोशिश की है। वे किसानों को परिवर्तन के लिए प्रेरित करते है। कवि के काव्य का केन्द्र मानवीय संवेदना की लोकवादी अभिव्यक्ति है, जिसका आशय मनुष्यता के मूल्य का निर्माण करना है।

मुख्य शब्दः– सामाजिक संवेदना, हिन्दी साहित्य, छायावादी काव्य, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला।

प्रस्तावनाः–

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला, हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के छायावादी प्रमुख कवियों में से एक है जो ब्रिट्रिश कालीन भारत के समय कवि थे जिनकी दृष्टि राष्ट्रीय या देश–प्रेम ,सामाजिक आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक आदि हर तरफ गड़ी हुई थीं। वे देख रहे थे कि किस तरह हमारे देश के समाज के अनपढ किसान एवं मजदूर वर्ग के लोगों का जमींदारों एवं अंग्रेजों के कृपापात्रों द्वारा जमकर किस तरह शोषण किया जा रहा है। उन्होंने इसको देखा, परखा ही नहीं था बल्कि अनुभव भी किया और किसान आंदोलन का नेतृत्व भी कर रहे थे। इस संबंध में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी लिखते है '' निराला ने वर्षों तक गॉव में रह कर किसानों का आदोलन चलाया और तब तक साथ दिया जब तक किसानों में पूरी तरह आत्मपरायण कि भावना भर नहीं गई जब निराला ने देखा कि किसान ही उनका साथ नहीं देते और वे जमींदारों तथा सरकारी अफसरों और पुलिस के सम्मिलित आतंक से अभिभूत हो गये है तब उन्होंने इस आंदोलन से अपना पिण्ड छुड़ाया।'' यही वह कारण है जो निराला जी की के चित्रण में किसान एवं मजदूर वर्ग का हिस्सा उनकी कविता के रहे और उनका उद्घाटन भी उनकी कविताओं में यत्र–यत्र विखरा पड़ा है। उनकी प्रमुख रचनाओं में अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता,नऐ–पत्ते,वनबेला,अणिमा,आराधना,अर्चना,सांध्याकाकली, एवं गीतगुंज आदि है जिनमें संकलित बादलराग,दीन,विनय,उत्साह,पॉचक,झींगुर डटकर बोला,कुत्ता भोकने लगा,एवं वे किसान की नयी बहू की ऑखे आदि वे कविताएं है जिनमें किसान की करूणिक दशा तथा जमींदारों एव अंग्रेजों के कृपापात्रों के प्रति विद्रोह का स्वर उद्घाटित हुआ है। जिसको इस प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. **निराला और उनकी कविता में किसान चेतना की पृष्ठभूमिः**– महाकवि निराला की कविता में किसान चिंतन के जो विचार उद्घाटित हुए है उसके क्या कारण हैं एवं उनकी कविता में किसान चित्रण एक विषय के रूप में सम्मिलित क्यों हुए एवं इसका बीज–अंकुरण कहॉ से हुआ यही वे प्रश्न हैं जहा से उनकी कविता में किसान विमर्श की पृष्ठभूमि तैयार होती है एवं उनकी कविता के विषय के रूप में किसान हमारे समाने उपस्थित होता है इन्ही उत्तरों को जानने के लिए हमें उनके उसम में जाना होगा जब भारत ब्रिटिश साम्राज्य का गुलाम था तथा जमींदारी प्रथा का बोलबाल हुआ करता था तो इसके संबंध में मैं भूमिका में पहले दिखा चुका हू कि महाकवि निराला जी किस आंदोलन से जुड़े थे अर्थात् वे गुलाम भारत के समय में गॉव में रहकर किसान आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे इस संबंध डॉ रामविलास शर्मा लिखते है ''निराला ने सुधा में जितनी टिपाणियॉ लिखी उनमें बार'–बार उन्होंने युवको का आह्वान किया कि गॉव में जाकर किसानों का संगठन करें।'' और इतना ही नहीं उनको शिक्षित करने की बात करते है। इस संबंध में डॉ रामविलास शर्मा जी लिखते है '' निराला का मत था कि राजनीतिक प्रचार का उद्देश्य यह होना चाहिए कि किसान शिक्षित हों उनमें यह योग्यता उत्पन्न हो कि राजनीति समस्याओं पर स्वयं विचार कर सकें उद्देश्य यह ने होना चाहिए कि वे कुछ नेताओं के अनुयायी मात्र बनकर रह जाऐ।''

उक्त बातों से जान पड़ता है कि किसानों को शिक्षित करके निराला उनमें राजनीतिक जागृति लाना चाहते थे न कि जमींदारों के शोषण से मुक्ति परन्तु उसमें भी एक लक्ष्य था जिसके जरिए कवि पाने चाहते थे इसके सबंध में डॉ रामविलास शर्मा जी लिखते है कि '' जमींदारों के खिलाफ किसानों की लड़ाई केवल उनमें वर्ग स्वार्थ की लड़ाई नही थी, निराला की समझ में वह आजादी की लड़ाई का अभिन्न अंग थी क्योंकि अंग्रेजों के पास भारत की बहुसंख्यक जनता–किसानों को दबाए रखने का मुख्य साधन थे जमींदार सन्– 1929 ई की मंदी से और भी स्पष्ट हो गया कि साम्राज्यवाद के शोषण चक्र में सबसे ज्यादा पीसे जाते है किसान। ''

अर्थात् उनका सीधा मतलब था कि यदि देश आजाद हो गया तो इनके शोषण से बचा जा सकता है। परन्तु जो कवि में लिखने की शक्ति किसानों के संन्दर्भ में थी उसका मुख्य

कारण उनका गांव गढकोला जो वर्तमान उन्नाव जिला उत्तरप्रदेश में स्थित है इसके संबंध में डॉ रामविलास शर्मा जी लिखते है '' अलका मै वह गांव जहॉ विजय किसानों का संगठन करता है, चतुरी चमार का गॉव निराला जिसमें स्वयं किसानों की लड़ाई लड़ते है। 'नऐ पत्ते' की कविताओं का गांव जहाँ नए संधर्ष फूट पड़ते है सब अवध के एक पिछड़े हुए गांव–गढाकोला की प्रतिच्छवि है।'' शर्मा जी के वक्तव्य से स्पष्ट है कि किसान जीवन जो उनकी कविताओं एवं अन्य रचनाओं में मिलता है उसका मुख्य कारण है उनका पैतृक गांव गढाकोला जो जिला उन्नाव उत्तरप्रदेश में स्थित है उसी की यह प्रतिध्वनि है जिसके कारण उनकी कविता में किसान का जीवन संधर्ष उद्घाटित हुआ है।

2. निराला और उनकी कविता में किसान संघर्ष निराला :– निराला जी गुलाम भारत के समय के महाकवि थे जिन्होंने किसानों एवं मजदूरों आदि पर कियें जा रहे जमीदारों एवं अंग्रेजों के कृपा पात्रों द्वारा शोषण एवं अत्याचारों को देखा,परखा एवं अनुभव भी किया था इसलिए जमींदारों के विरूध्द अमीरों की हवेली में किसानों को शिक्षित करने के लिए पढाऐगें क्योंकि वे जानते थे कि किस प्रकार से अनपढ किसान एवं मजदूर आदि का शोषण किया जा रहा है इसलिए उन्हें उनके अधिकार के प्रति सचेत करने के लिए प्रयास करते नजर आ रहे है। यथा 'वनबेला' सग्रह से 'राग–विराग' में संकलित जल्द–जल्द पैर बढाओं आओं,आओ' कविता की निम्मन पंक्तियॉ देखिए

'' आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी,पासी,चमार,तेली
खोलेगें अंधेरे का ताला
एक पाठ पढेगें,टाट बिछाओं''

इसका मुख्य कारण था अशिक्षा अर्थात् किसान आदि वर्ग जो उसमें कमजोर वर्ग था वह अनपढ था जिसका फायदा जमीदार एव सेठ साहूकार आदि सम्पन्न वर्ग उठा रहा था 'नऐ पत्ते संकलन से 'रागविराग' में संकलित 'झींगुर डटकर बोला' कविता में गांधीवादी एवं कांग्रेस के नेता अपना राग अलाप रहे थे तभी जमीदार के सिपाही ने एक खेत के फासले से गोलियॉ चलाने लगता है यथा 'झीगुर डट कर बोला' कविता की निम्न पंक्तियॉ देखिए'

'' जमीदार का गोडइट
छो नाली लिए हुए
एक खेत फासले से
गोली चलाने लगा
भींड़ भगने लगी
कान्स्टेब्ल खड़ा हुआ ललकारता रहा।,,

फिर इसके बाद क्या हुआ यह किसान झींगुर के वक्तव्य से स्पष्ट है यथा 'झीगुर डट कर बोला' कविता की निम्न पंक्तियॉ देखिऐ

'' झीगुर ने कहा,
चूॅकि हम किसान सभी के,
भाई जी के मददगार
जमींदार ने गोली चलवाई
पुलिस के हुक्म की तमीली की।
ऐसा यह पेच है।,,

इसलिए कवि यह किसानों के संदर्भ में कहने के लिए विवश हैं ' अपरा ' में संकलित सन् 1920 ई की 'बादल राग' कविता की निम्नपंक्तियॉ देखिए

'' चूस लिया है उसका सार ,
हाड–मात्र ही है आधार ,
एक जीवन के पारावार,,

गुलाम भारत में किसानों की यही स्थिति थी उनका अंग्रेजों ने जमीदारों सेठ साहूकारों एवं पुलिस कारिन्दों आदि की आड से किसानों पर अत्याचार एवं शोषण करते थे जिसके आतंक से किसान कॉप उठते थे इसलिए क्रांतिकारी बादलों को कृषक बुला रहे हैं 'अपरा' में संकलित सन् 1920ई की 'बादलराग' कविता की निम्न पंक्तियॉ देखिए यथा।

'' रूध्द कोश है क्षुब्ध कोश
अंगना–अंग से लिपटे भी
आतंक–अंक पर कांप रहे है।
धनी बज्रगर्जन से बादल
त्रस्त नयन–मुख ढॉप रहे है।
जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,,

इतना ही नही वे किसानों की दीन दशा का चित्रण स्पष्ट रूप से करते नजर आ रहे है जिनकी फसल नष्ट हो गयी है उनकी क्या स्थिति है इसका यथार्थ सत्य 'कुत्ता भोकने लगा' उनकी कविता की निम्न पंक्तियॉ देखें जिसमें किसान का जीवन संघर्ष छुपा हुआ है जिसका कवि ने उजागर किया है यथा––

'' आज ठंडक अधिक है।
बाहर ओले पड़े चुके हैं
एक हफ्ते पहले पाला पड़ा था –
अरहर कुल की कुल मर चुकी थी,
हवा हाड तक बेध जाती है ''
गेहू के पेड़ ऐंठे खडे हैं,
खेतिहरों में जान नहीं,
मन मारे दरवाजे कोडे ताप रहे हैं
एक दूसरे से गिरे गले बाते करते हुए
कुहरा छाया हुआ।
ऊपर से हबाबाज उड़ गया।

इतना सब कुछ किसानों का हाल हो गया एवं उनकी सारी फसल बर्बाद हो गयी है किन्तु संकट टला नहीं और ऊपर से एक संकट आ पड़ा जमीदार उनसे सिपाहियों की सहायता से चंदा बसूलने आये और उनके साथ जोर जबर्दस्ती कर रहें है जिसका चित्रण कवि ने 'कुत्ता' भौकने लगा 'कविता की निम्न पंक्तियों मै किया है यथा

'' जमीदार का सिपाही लट्ठ कंधे पर डाले
टाया और लोगों की ओर देखकर कहा,
डेरे पर थानेदार आए हैं।
डिप्टी साहब ने चंदा लगाया है,
एक हफते के अंदर देना है।
चलो, बात दे आओ।
कौड़े से कुछ हटकर
लोगों किसार्थ कुत्ता खेतिहर का बैठा था
चलते सिपाही को देखकर खड़ा हुआ
और भौकने लगा
करूणा से बंधु खेतिहर को देख–देख कर ''

इतना ही नहीं यदि फसल अच्छी हो भी जाय तो किसानों को जमीदारों को मुहमांगे दामों में मिट्टी मोल देनी पडती थी उसका कारण था उनकों लगान रूपयों से दनी होती थी जमीन का एक–दो तिहाई हिस्सा नही इस संबंध में डॉ रामविलास शर्मा निराला जी लिखते है '' पाट,सन,रूई,गल्ला आदि जितना कच्चा माल यहॉ पैदा होता है, मुँह मॉगे दामों पर ही दिया जाता है। किसान लोगों में माल रोक रखने की ढ्ढता नही और उद्ढता की जड़ भी काट दी गई । कारण लगान उन्हें रूपयों से देना पड़ता है। खेत की पैदावार का तिहाई चौथाई हिस्सा नहीं।''इसलिए कवि किसानों की पाठ ाला खोलना चाहते हैं और उसे अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना चाहते है जिसका संकेत हम पहले कर चुके हैं उसके बाद कवि देश में आजादी चाहते है जिससे किसानों के बैंक होगें देश की सम्पत्ति होगी और जनता जातीय वेश की होगी ''जल्द – जल्द पैर बढ़ाओं आओ,आओ,, नामक कविता की निम्नपक्तियॉ देखे–

''यहॉ जहॉ सेठ जी बैठे थे
बनिये की ऑख दिखाते हुए,
उनके ऐंठाये ऐंठे थे
धोखे पर धोखा खाते हुए,
बैंक किसानों का सुलवाओं।
सारी सम्पत्ति देश की हो,
सारी आपत्ति देश की बने,
जनता जातीय वेश की हो
वाद से विवाद यह ठने,
कॉटों कॉटों से कढाओं''

निकर्ष:–

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि महाकवि निराला ने किसानों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण का जो किसान जीवन का किसान संघर्ष अपनी कविता में पूर्ण तल्लीनता के साथ चित्रण किया है इसका उन पर किसी प्रकार का आरोप लगाना उनके प्रति अन्याय होगा उनके इस योगदान के लिए वे सदा स्मरणीय रहेंगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. कवि निराला –नंददुलारे वाजपेयी/लोक भारतीय प्रकाशन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद –211001/पहला –2015/पृ02
2. निराला की साहित्य साधना भाग–2/डॉ. रामविलास भार्मा /राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी,नेता जी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110002/नौवाँ–2016/पृ023, वही, वही, 24,25.
3. रागविराग–डॉ. रामविलास शर्मा/लोकभारती प्रकाशन/संस्करण–2018/पृ0137,140, वही
4. अपरा–सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0/दूसरा छात्र संस्करण 1993–94/पृ011, वही
5. निराला काव्य की छविया–नंदकिशोर नवल/राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0/सरसंकरण –2018/पृ0162,वही,163
6. निराला की साहित्य साधना भाग 2/पृ. 24
7. रागविराग/पृ0137,138